https://artorbit.in/
*Art Orbit - Volume 02, No 01, Jan 2026, JAN. 2026, PP 05-08 (Total PP 04)*
*ISSN : 3107- 670X (Online)*
Frequency – Monthly

# THE INFLUENCE OF THE RICH TRADITION OF TERRACOTTA ART DISPLAYED IN THE MUSEUMS OF RAJASTHAN ON CONTEMPORARY ART (**राजस्थान के संग्रहालयों में प्रदर्शित माटीशिल्प की समृद्ध परम्परा का समकालीन कला पर प्रभाव**)

**Dr. Laxman Lal Sargada**[a]∗ **Chanda Damor**[b]

[a] *Research Supervisor, Associate Professor, Painting, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)*

[b] *Research Scholar, Research Scholar, Department of Visual Arts, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)*

[a]*Email: laxmanart31@gmail.com*

**Abstract**

Rajasthan's terracotta art tradition is an important part of Indian cultural heritage, serving as a medium of utility, beauty, and expression of folk life. Earthen pots, sculptures, and clay toys discovered from archaeological sites such as Kalibangan and Ahar reflect the antiquity and advanced nature of this art form. Museums of Rajasthan, such as Government Museum Bikaner, Albert Hall Museum, and Kalibangan Museum preserve these artworks and inspire artists and researchers. Contemporary artists are drawing inspiration from traditional terracotta art and experimenting with modern sculpture, painting, design, and decorative arts. Its influence can also be seen in fashion, graphic, and interior design. Since terracotta is eco-friendly and biodegradable, it has become even more relevant in the modern era. Internationally, Rajasthan's terracotta art represents Indian folk culture on a global platform. Although challenges such as industrialization, machine-made products, and the declining number of artisans exist, proper preservation and encouragement can strengthen and sustain this rich artistic tradition in the future.

राजस्थान की माटीशिल्प परंपरा भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण अंग है, जो उपयोगिता, सौंदर्य और लोकजीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। कालीबंगा और आहाड़ जैसे पुरातात्त्विक स्थलों से प्राप्त मृद्भाण्ड, मूर्तियाँ और मिट्टी के खिलौने इस कला की प्राचीनता और विकसित स्वरूप को दर्शाते हैं। राजस्थान के संग्रहालय–जैसे बीकानेर राजकीय संग्रहालय, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय और कालीबंगा संग्रहालय–इन कलाकृतियों को संरक्षित कर कलाकारों और शोधकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान करते हैं। समकालीन कलाकार पारंपरिक टेराकोटा कला से प्रेरित होकर आधुनिक मूर्तिकला, चित्रकला, डिज़ाइन और सजावटी कलाओं में नए प्रयोग कर रहे हैं। माटीशिल्प का प्रभाव फैशन, ग्राफिक और इंटीरियर डिजाइन में भी दिखाई देता है। यह कला पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण आज के समय में और अधिक प्रासंगिक बन गई है। वैश्विक स्तर पर भी राजस्थान की टेराकोटा कला भारतीय लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रही है। हालांकि औद्योगिकीकरण, मशीन निर्मित वस्तुओं और घटती कारीगर संख्या जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी संरक्षण और प्रोत्साहन के माध्यम से इस परंपरा को भविष्य में और सशक्त बनाया जा सकता है।

***Keywords:*** Terracotta Art, Cultural Heritage, Contemporary Art, Museum, Sculpture, Folk Culture, Environmental Conservation
माटीशिल्प, सांस्कृतिक धरोहर, समकालीन कला, संग्रहालय, मूर्तिकला, लोक संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण

---

∗ Corresponding author.

**प्रस्तावना**

राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराएँ अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी रही हैं। इनमें माटीशिल्प (टेराकोटा कला) का विशेष स्थान है, जो न केवल उपयोगिता से जुड़ी कला है, बल्कि सौंदर्य, आध्यात्मिकता और लोकजीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। राजस्थान के विभिन्न संग्रहालय–जैसे राजकीय संग्रहालय, बीकानेर, अल्बर्ट हॉल संग्रहालय और राजकीय संग्रहालय, कालीबंगा–में संरक्षित माटीशिल्प न केवल अतीत की झलक प्रस्तुत करते हैं, बल्कि समकालीन कला को भी गहराई से प्रभावित करते हैं।

*Art Orbit - Volume 02, No 01, Jan 2026, JAN. 2026, PP 05-08 (Total PP 04)*
*ISSN : 3107- 670X (Online)*
Frequency – Monthly

आज के कलाकार इन प्राचीन कलाकृतियों से प्रेरणा लेकर नई शैलियों, माध्यमों और अवधारणाओं का सृजन कर रहे हैं। इस प्रकार, अतीत और वर्तमान के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण हो रहा है।

**माटीशिल्प की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसकी कलात्मक विशेषताएँ**

राजस्थान के प्राचीन पुरातात्त्विक स्थलों, विशेष रूप से सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित कालीबंगा और आहाड़ से प्राप्त मृद्भाण्ड, मूर्तियाँ तथा मिट्टी के खिलौने इस बात के प्रमाण हैं कि यहाँ माटीशिल्प कला अत्यंत उन्नत और विकसित अवस्था में थी। इन कलाकृतियों में सरलता के साथ गहरी कलात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। ज्यामितीय आकृतियों, प्राकृतिक अलंकरणों तथा लाल, काले और गेरुए रंगों का संतुलित प्रयोग इन्हें विशिष्ट बनाता है। साथ ही इनमें धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक जीवन से जुड़े विषयों का सुंदर चित्रण मिलता है। इन प्राचीन कलात्मक विशेषताओं का प्रभाव आज भी समकालीन कला में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ आधुनिक कलाकार इन्हीं तत्वों से प्रेरणा लेकर अपने कार्यों में पारंपरिक सौंदर्य और आधुनिक दृष्टिकोण का समन्वय प्रस्तुत कर रहे हैं।

*आकृति 1क्रीड़ा, बड़ोपाल, प्रारम्भिक गुप्तकाल (270 ई.), टेराकोटा - बीकानेर संग्रहालय।*

**संग्रहालयों की भूमिका: प्रेरणा के केंद्र के रूप में**

राजस्थान के संग्रहालय केवल ऐतिहासिक वस्तुओं को सुरक्षित रखने के स्थान नहीं हैं, बल्कि वे कला और संस्कृति के ऐसे जीवंत केंद्र हैं जो आज भी कलाकारों और शोधकर्ताओं को प्रेरित करते हैं। राजकीय संग्रहालय, बीकानेर में संरक्षित गुप्तकालीन मृण्मूर्तियाँ और लोक आकृतियाँ अपनी सादगी, संतुलन और गहन भावाभिव्यक्ति के कारण आधुनिक मूर्तिकारों को नई कलात्मक दृष्टि प्रदान करती हैं। इन कलाकृतियों की शैली और संरचना को समकालीन कलाकार अपने कार्यों में नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसी प्रकार अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में प्रदर्शित विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्ड भारत की विविध कला परंपराओं का परिचय कराते हैं। इनकी विविध शैली, रंग-संयोजन और अलंकरण आधुनिक कलाकारों को नए प्रयोग करने तथा पारंपरिक और आधुनिक कला के समन्वय की प्रेरणा देते हैं।

**समकालीन मूर्तिकला पर प्रभाव**

समकालीन मूर्तिकला में राजस्थान की माटीशिल्प परंपरा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज के कलाकार पारंपरिक मिट्टी कला की तकनीकों और शिल्प शैली को अपनाकर उन्हें आधुनिक रूप प्रदान कर रहे हैं। अनेक कलाकार टेराकोटा माध्यम का उपयोग करते हुए अमूर्त और नवीन आकृतियों का निर्माण कर रहे हैं, जिनमें पारंपरिकता और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। वहीं देवी-देवताओं की पारंपरिक मूर्तियों को भी नए संदर्भों और आधुनिक विचारधाराओं के अनुरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। लोकजीवन, ग्रामीण संस्कृति और सामाजिक विषयों को समकालीन दृष्टिकोण के साथ जोड़कर कलाकार नई कलात्मक अभिव्यक्तियाँ विकसित कर रहे हैं। इस प्रकार माटीशिल्प की प्राचीन परंपरा और आधुनिक कला के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित हो रहा है, जो भारतीय कला की निरंतरता और विकास को दर्शाता है।

**चित्रकला और डिजाइन में प्रभाव**

माटीशिल्प का प्रभाव केवल मूर्तिकला तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने चित्रकला, डिजाइन और सजावटी कलाओं को भी गहराई से प्रभावित किया है। राजस्थान के पारंपरिक मृद्भाण्डों पर अंकित ज्यामितीय आकृतियाँ, प्राकृतिक अलंकरण और लोक शैली के प्रतीक आज के ग्राफिक डिजाइन, टेक्सटाइल डिजाइन तथा आधुनिक पेंटिंग में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। फैशन डिजाइन में पारंपरिक पैटर्न और लोक रूपांकनों का प्रयोग बढ़ रहा है, जबकि इंटीरियर डिजाइन में टेराकोटा आधारित सजावट आधुनिक घरों और सांस्कृतिक स्थलों की सुंदरता को बढ़ा रही है। इसके साथ ही समकालीन चित्रकला में लोक आकृतियों और पारंपरिक प्रतीकों का पुनर्प्रयोग कलाकारों द्वारा नए रूप में किया जा रहा है। ये सभी उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि माटीशिल्प आज भी अपनी सांस्कृतिक और कलात्मक प्रासंगिकता बनाए हुए है तथा आधुनिक कला को निरंतर प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

**पर्यावरणीय चेतना और माटीशिल्प**

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एक अत्यंत महत्वपूर्ण और वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। ऐसे में माटीशिल्प का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह पूर्णतः प्राकृतिक, जैव-अपघटनीय और पर्यावरण के अनुकूल कला माध्यम है। समकालीन कलाकार और डिजाइनर अब धीरे-धीरे प्लास्टिक तथा अन्य कृत्रिम सामग्रियों के स्थान पर मिट्टी जैसे पारंपरिक और प्राकृतिक माध्यमों को अपनाने लगे हैं। इससे एक ओर पर्यावरण पर पड़ने वाला नकारात्मक प्रभाव कम होता है, वहीं दूसरी ओर प्राचीन माटीशिल्प परंपरा को भी नया जीवन और प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार, माटीशिल्प न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करता है, बल्कि सतत विकास और पर्यावरण संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## लोक और वैश्विक कला के बीच सेतु

राजस्थान का माटीशिल्प अब केवल स्थानीय या क्षेत्रीय कला तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह अपनी विशिष्ट पहचान के साथ वैश्विक स्तर पर भी उभर रहा है। अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक आयोजनों में टेराकोटा कला को विशेष स्थान दिया जा रहा है, जहाँ इसे भारतीय पारंपरिक कला के महत्वपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। समकालीन कलाकार अब पारंपरिक तकनीकों और शिल्प विधियों को आधुनिक विचारों और अवधारणाओं के साथ जोड़कर ऐसी कृतियाँ तैयार कर रहे हैं, जो वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करती हैं और उन्हें भारतीय लोक कला की गहराई से परिचित कराती हैं। इस प्रकार माटीशिल्प धीरे-धीरे लोक परंपरा से आगे बढ़कर अंतरराष्ट्रीय समकालीन कला का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

## शिक्षा और अनुसंधान में योगदान

राजस्थान के संग्रहालय शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संग्रहालय कला के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए जीवंत अध्ययन केंद्र के रूप में कार्य करते हैं, जहाँ वे प्राचीन माटीशिल्प की तकनीकों, रूप-रेखाओं और विविध शैलियों का गहन अध्ययन करते हैं। इन संग्रहालयों में संरक्षित कलाकृतियाँ उन्हें यह समझने में सहायता करती हैं कि प्राचीन कलाकार किस प्रकार सरल माध्यमों से अत्यंत प्रभावशाली और अर्थपूर्ण कला का सृजन करते थे।

इस अध्ययन और शोध के आधार पर विद्यार्थी एवं समकालीन कलाकार नई-नई कलात्मक अभिव्यक्तियों का विकास करते हैं तथा पारंपरिक और आधुनिक कला के बीच एक नया संतुलन स्थापित करते हैं। इस प्रकार माटीशिल्प केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर भर नहीं रह जाता, बल्कि यह भविष्य की कला के विकास का एक मजबूत आधार भी सिद्ध होता है।

## चुनौतियाँ और संरक्षण की आवश्यकता

यद्यपि माटीशिल्प की परंपरा आज भी जीवित है और ग्रामीण तथा कुछ शहरी क्षेत्रों में इसका उपयोग देखा जा सकता है, फिर भी इसे अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे प्रमुख चुनौती औद्योगिकीकरण और मशीनों का बढ़ता प्रभाव है, जिसके कारण हस्तनिर्मित माटी उत्पादों की मांग में कमी आई है। मशीन से बने सस्ते और आकर्षक उत्पादों ने पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों और कलाकृतियों के बाजार को प्रभावित किया है। इसके साथ ही पारंपरिक कारीगरों की संख्या भी लगातार घटती जा रही है, क्योंकि नई पीढ़ी इस पेशे को अपनाने में कम रुचि दिखा रही है। आर्थिक अस्थिरता और उचित प्रोत्साहन के अभाव में अनेक शिल्पकार अपने पारंपरिक कार्य को छोड़कर अन्य व्यवसायों की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

इसके अलावा आधुनिक जीवनशैली में आए परिवर्तन ने भी माटीशिल्प के उपयोग को सीमित कर दिया है। प्लास्टिक, स्टील और अन्य आधुनिक सामग्री के बढ़ते उपयोग के कारण मिट्टी के उत्पादों की उपयोगिता पहले की तुलना में कम हो गई है। फिर भी, इन सभी चुनौतियों के बावजूद यदि माटीशिल्प को उचित संरक्षण, सरकारी सहायता और बाजार में प्रोत्साहन दिया जाए, तो यह कला न केवल जीवित रह सकती है, बल्कि भविष्य में और अधिक विकसित होकर अपनी नई पहचान भी बना सकती है।

## निष्कर्ष

राजस्थान के संग्रहालयों में प्रदर्शित माटीशिल्प केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि यह समकालीन कला के विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह परंपरा आज भी कलाकारों को प्रेरित कर रही है और उन्हें नई दिशाओं में सोचने के लिए प्रेरित करती है। माटीशिल्प की सादगी, प्राकृतिकता और सौंदर्य आज के जटिल और तकनीकी युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और यह सिखाती है कि सृजन की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति साधारण तत्वों में भी संभव है। अतः यह कहा जा सकता है कि राजस्थान का माटीशिल्प न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि समकालीन कला का एक महत्वपूर्ण आधार भी है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक सूत्र में बांधता है।

## संदर्भ:

1. व्यक्तिगत सर्वेक्षण
2. देवदत्त शर्मा, राजस्थान का माटीशिल्प, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, 2013
3. धवलिकर एम. के., मास्टर पिसेज ऑफ इंडियन टेराकोटाज, मुम्बई, 1977, पृ.सं. 39-43
4. बंसल, वर्षा। "प्रागैतिहासिक से समकालीन काल तक मृण्मय फलक का स्वरूप।" *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*, खंड 6, अंक 11, जुलाई 2019, पृ. 26-31.
5. दीक्षित, बीना, और आशीष कुमार, "*भारतीय कला के विभिन्न रूपों का अध्ययन*" *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)*, vol. 29, no. 12, ser. 1, Dec. 2024, pp. 71-76.
6. https://shop.museumsofindia.org/node/793

https://artorbit.in/
*Art Orbit - Volume 02, No  01, Jan 2026, JAN. 2026, PP 05-08 (Total PP 04)*
*ISSN : 3107- 670X (Online)*
Frequency – Monthly